TOPIC - लघुशोध (Dissertation) अथवा शोध (Thesis) का अध्यायीकरण (Chapterization)

Camlin Page
Date 28/04/20

शोधार्थियों को यह विदित होना चाहिए कि शोध/लघुशोध का बाह्य स्वरूप / पृष्ठों का संख्यात्मक अतिव्याप्ति दोष से रहित होना चाहिए। अर्थात न तो बहुत विशाल न बहुत सूक्ष्म (लघु आकार)। सामान्यतः 4-8 अध्यायों में शोध/लघुशोध का बाह्य रूप देखने को मिलता है। इसे मानकर ही शिक्षा-शास्त्र में शो लघुशोध की ओर प्रवृत्त होनेवाले स्नातकोत्तर शोधार्थियों को फिलहाल सम्पूर्ति 4-5 अध्यायों में अनुसंधान की सार्थकता को सुव्यवस्थित करना उचित सा प्रतीत होता है। जो निम्नलिखित रूप से द्रष्टव्य है, किन-किन अध्यायों में किन-किन बिन्दुवारों (Point wise) के तहत किन किन पक्षों को सुव्यवस्थित किया जाता है : जो इस प्रकार है।

अध्याय - 1 (Chapter-1)

• उपोद्घात :

1.1 अनुसंधान की पृष्ठभूमि / अनुसंधान का औचित्य
1.2 * अनुसन्धान की आवश्यकता (Need of research)
1.3 अनुसन्धान विषय उद्घोष / कथन
1.4 Statement of the Problem

1.4 अनुसन्धान चर (Research variables)
1.5 अनुसन्धान का उद्देश्य (objectives of the research)
1.6 अनुसन्धान परिकल्पना (Research Hypotheses)
1.7 परिकल्पनाओं का तर्काधार Rationale of the Hypotheses
1.8 संक्रियात्मक परिभाषाएँ Operational definitions
1.9 अनुसन्धान का परिसीमन (Delimitations of the study)

Scanned with CamScanner